भारत में संवाद और वाद-विवाद की समृद्ध परंपरा रही है: लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली, 14 फरवरी 2020: लोक सभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला ने आज संसदीय ज्ञानपीठ में संसदीय लोकतन्त्र शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित 35वें अंतर्राष्ट्रीय विधायी प्रारूपण प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता की। एक महीने तक चले इस कार्यक्रम में छब्बीस देशों के चालीस प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

भारत की संसद में विधायी प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण देते हुए श्री बिरला ने कहा कि "भारत में संवाद और वाद-विवाद की समृद्ध परंपरा रही है। "उन्होने कहा कि पूरे देश के लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी दलों के सदस्य कानून पर बहुत बारीकी से चर्चा करते हैं और उसके बाद ही इसे संसद द्वारा पारित किया जाता है। श्री बिरला ने यह जानकारी भी दी कि प्राइड राष्ट्रीय स्तर पर भी विधायी प्रारूपण के बारे में ऐसे ही प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा।

विधायी प्रारूपण संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बोलते हुए, श्री बिरला ने कहा कि सुशासन प्रभावी कानून बनाने के साथ जुड़ा है और ऐसे कार्यक्रमों से हमें लोकतन्त्र को सुदृढ़ बनाने में बहुत मदद मिलती है। उन्होने यह भी कहा कि विधि निर्माण का लक्ष्य लोगों का सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक उत्थान होना चाहिए और इस संदर्भ में प्रभावी विधायी प्रारूपण बहुत महत्वपूर्ण होता है।

श्री बिरला ने कहा कि भारत विविधताओं से भरा देश है और भारत की ताकत इसका लोकतन्त्र और इसकी विविधता है। श्री बिरला ने उपस्थित लोगों को बताया कि भारत विश्व में सबसे बड़ा लोकतन्त्र है और पिछले आम चुनाव में, 600 मिलियन से भी अधिक लोगों ने मतदान किया। श्री बिरला ने इस बात का उल्लेख किया कि भारतीय लोकतन्त्र की विशेषता पूरी पारदर्शिता से किए जाने वाले स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हैं।

श्री बिरला ने कहा कि तेजी से वैश्वीकृत हो रही दुनिया में यह आवश्यक है कि विश्व के सभी देश परस्पर विश्वास और सहयोग के वातावरण में शांति, सुरक्षा और विकास के लिए मिलकर काम करें। उन्होने यह भी कहा कि भारत इस दिशा में लगातार प्रयास कर रहा है।

परस्पर विश्वास और सहयोग के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए, श्री बिरला ने कहा कि हम वसुधैव कुटुंबकम अर्थात सारी दुनिया एक परिवार है, के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। उन्होने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि भारत विश्व के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदान-प्रदान में अग्रणी भूमिका निभा रहा है और भारत ज्ञान और आध्यात्मिकता की भूमि है।